दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

**HL-A-DTVF-17**

निर्धारित समयः तीन घंटे
*Time allowed: Three Hours*

अधिकतम अंकः 250
*Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनुपम जाखड़.

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एव दिनांक (Test No. & Date): 1 / 16/07/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 5 5 3 7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Word limit in questions, if specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.*

*Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.*

प्रयास अच्छा है। उत्तर-लेखन का अभ्यास करते रहें

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 129  टिप्पणी (Remarks):


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

## SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) पहाड़ी हिंदी

पहाड़ी हिन्दी उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में बोली जाती है। वर्तमान में इसमें हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड जैसे राज्य आते हैं।

पहाड़ी हिन्दी भी अन्य बोलियों की तरह अपभ्रंश से ही विकसित हुई है। इसका उद्भव खस अपभ्रंश से हुआ है। इसमें प्रमुखतः कुमाऊँनी व गढ़वाली बोलियाँ आती हैं। यह हिन्दी भाषा की उपभाषा है। उपभाषा बोलियों का वर्ग होता है जिसमें समय व ऐतिहासिक समानता व भौगोलिक क्षेत्र की एकरूपता होती है।

पहाड़ी हिन्दी पर राजस्थानी व पंजाबी का प्रभाव है। मूर्धन्य ध्वनियाँ जैसे 'ळ' का प्रयोग होता है। 'ण' का प्रयोग 'न' के स्थान पर होता है। यह ओकारांत भाषा है यथा- घोड़ो, कालो आदि।

यहाँ 'ड़' के स्थान पर 'र' 'ड़' का प्रयोग होता है। इस प्रकार पहाड़ी हिन्दी, हिन्दी भाषा का एक महत्वपूर्ण उपभाषा वर्ग है। यह आज भी बोलियों के रूप में भारतवर्ष के उत्तरी क्षेत्रों की लोक-संस्कृति, लोकभाषा का अभिन्न अंग है।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अकबर के नवरत्नों में से एक रहीम की पहचान चिंतक, सामंजस्यवादी व भारतीय संस्कृति की सामासिक प्रवृत्ति के उदाहरण के रूप में है।

रहीम ने खड़ी बोली साहित्य में अपनी रचनाओं 'मदनाष्टक', 'दोहावली' के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अकबर के दरबार में रहते हुए भी उनकी प्रशंसा में एक शब्द नहीं लिखा।

वह भारतीय देवी-देवताओं, यहाँ की सांस्कृतिक विरासत के जानकार थे। भगवान राम के लिए उन्होंने लिखा -

"चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा पड़त है, आवत एहि देश ।।"

रहीम की पहचान एक चिंतक के रूप में, सामाजिक परिवेश के जानकार के रूप में भी है। वह मन के द्वन्द्व को व्यक्त करते हुए कहते हैं-
"साँचे से तो जग नांही, झूठे मिले न राम"

रहीम ने खड़ी बोली में दोहों की रचना की। उनके दोहों में ज्ञान भी है, व्यावहारिक समझ भी। वह राम के बारे में भी लिखते हैं और इस्लाम में भी आस्था रखते हैं। अतः रहीम साम्प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक भी हैं। वह कहते हैं:-

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े रे गाँठ पड़ जाये।।"

अत: रहीम ने भक्तिकाल में खड़ी बोली के प्रारंभिक संकेत दिए, अपनी काव्यभाषा के जरिए। यही खड़ी बोली राष्ट्र आंदोलन में जन भाषा बनकर उभरी।

6/10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरधान जायसी

अवधी भाषा का उद्भव अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ। यह पूर्वी उत्तरप्रदेश की भाषा है। इसे कौसली, बैसवाड़ी नामों से भी जाना जाता है। अवधी के प्रसिद्ध रचनाकार जायसी हैं।

जायसी लोक-अवधी के कवि हैं। वे सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि हैं। लोक-अवधी में जायसी ने मिठास से भरा हुआ प्रेमाख्यान "पद्मावत" लिखा है। यह लोक कथा पर आधारित है। इसमें निहित लोक-संस्कृति निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त होती है-

"ऐ रानि मनु देखु विचारि,
ऐही नैहर रहना दिन चारि।
खेल लेहुँ जो खेलन आजु,
जब तक अहै पिता के राजु।"

जायसी ने प्रेम को प्राथमिकता बताया। यह प्रेम लौकिक है न कि ईश्क-हकीकी। उन्होंने मनुष्य से मनुष्य के प्रेम को स्वर्ग से बढ़कर बताया-

"मानुष प्रेम भयउ बैकुंठी"

जायसी की पहुँच आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार जन-जन तक है। उनकी मिठास भाषा की अर्थात लोक भाषा की मिठास है। उन्हें अवधी में तुलसीदास जी से कम नहीं आँका जा सकता।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

अपभ्रंश भाषा का विकास पालि, प्राकृत भाषाओं से हुआ। इसकी परवर्ती भाषा अवहट्ट है। अपभ्रंश को का विभिन्न आलोचकों ने अलग-अलग तरह से वर्गीकरण किया है। इनमें प्रमुख हैं- डॉ. तगारे, मार्कण्डेय वर्मा, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा। अपभ्रंश का काल 500-1000 ई. माना गया है।

डॉ. तगारे ने अपभ्रंश को पूर्वी, पश्चिमी व दक्षिणी अपभ्रंश में बाँटा। उनका वर्गीकरण भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर था।

मार्कण्डेय वर्मा ने अपभ्रंश को नागर, उपनागर व ब्राचड अपभ्रंश में विभाजित किया। नागर अपभ्रंश नगरों में बोली जाने वाली अथवा गुजरात के नागर समुदाय द्वारा प्रयुक्त भाषा थी। उपनागर अपभ्रंश नागर व ब्राचड की मिश्रित भाषा थी।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने अपभ्रंश को इसकी प्राकृत से उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकृत किया। इन्होंने इसे शौरसेनी अपभ्रंश, अर्धमागधी अपभ्रंश व मागधी अपभ्रंश में विभाजित किया

शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी व राजस्थानी हिन्दी, अर्धमागधी से अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी तथा मागधी से पूर्वी हिन्दी बिहारी हिन्दी विकसित हुई। अपभ्रंश का एक भेद खस अपभ्रंश भी माना गया है इससे पहाड़ी हिन्दी की उत्पत्ति हुई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें।
(Please do not write anything except question number this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी भाषा ने आजादी के संघर्ष के दौरान खड़ी बोली की सहायता से अखिल भारतीय स्वर प्राप्त किया। यह राष्ट्रआंदोलन में एकीकरण की भाषा बनी।

हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियाँ सम्पूर्ण भारत में बोली जाती हैं। यह भाषा अपनी विविधता में भी एकता लिए हुए है। इसे राजभाषा का संवैधानिक दर्जा भी मिला परंतु राष्ट्रभाषा का स्वप्न आज भी अधूरा है।

देश के पूर्वी क्षेत्र में भोजपुरी, मगही, मैथिली बोली जाती है। उत्तरी भारत में पहाड़ी हिन्दी बोली जाती है। दिल्ली, हरियाणा में खड़ी बोली का प्रयोग होता है। यह सब हिन्दी भाषा के ही रूप हैं।

पश्चिमी भारत में राजस्थानी हिन्दी जिसकी बोलियाँ मारवाड़ी, मेवाड़ी, मालवी व जयपुरी हैं। ब्रज मण्डल में ब्रज-भाषा बोली जाती है। इस प्रकार हिन्दी भाषा सम्पूर्ण उत्तर भारत में विद्यमान है।

दक्षिण भारत में दक्खिनी हिन्दी बोली जाती है। यह फारसी का प्रभाव लिए हुए है। इसमें उर्दू का भी सम्मिश्रण है परंतु समग्र रूप से यह हिन्दी भाषा का ही एक प्रकार है।

इस प्रकार हिन्दी का भाषा-क्षेत्र वृहद है। आज संचार-क्रांति के माध्यम से, व्यापारिक आगमन से यह सुदूर दक्षिण में भी पहुँच रही है।

b/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राजस्थानी हिंदी' पर प्रकाश डालिए। 20

शौरसेनी प्राकृत
↓
उपभाषा – राजस्थानी हिंदी

बोलियाँ: मारवाड़ी, मेवाड़ी, जयपुरी, मालवी

राजस्थानी हिन्दी सम्पूर्ण राजस्थान, गुजरात के मालवा क्षेत्र, सिंध के कुछ भागों में बोली जाती है। यह हिन्दी भाषा का प्रमुख उपभाषा वर्ग है।

राजस्थानी हिन्दी की बोलियाँ मारवाड़ी, मेवाड़ी, जयपुरी, मालवी हैं। मारवाड़ी सबसे प्रमुख बोली है। इसी में सर्वाधिक साहित्य रचना हुई है। यह मारवाड़ क्षेत्र की बोली है तथा मारवाड़ी समुदाय से भी संबंध रखती है।

व्याकरणिक विशेषताएँ :–

1) यहाँ मूर्धन्य ध्वनियों का प्रयोग होता है जैसे–
जल – जळ (ल – 'ळ')

2) राजस्थानी हिन्दी में महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है।
उदाहरण – भूख – भूक, धोखा – धोका

3) 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग तथा 'र' के स्थान पर 'ड़' का प्रयोग भी राजस्थानी की विशेषता है।
उदाहरण – पानी – पाणी
पेड़ – पेड़


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4) 'से' परसर्ग के स्थान पर 'सूँ' परसर्ग का प्रयोग होता है।

5) 'ओकारांत' भाषा है। यही प्रवृत्ति शौरसेनी प्राकृत से उपजी ब्रजभाषा व खड़ी बोली में भी दिखाई देती है। उदाहरण - घड़ा - घड़ो, गोरा - गोरो

6) सर्वनाम- राजस्थानी हिन्दी में सर्वनाम के रूप में म्हारा, थारो, म्हाने आदी आदि का प्रयोग होता है।

जयपुरी बोली जयपुर के आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। मालवी बोली मालवा क्षेत्र में बोली जाती है। मेवाड़ी बोली मेवाड़ क्षेत्र की बोली है।

'ण' का प्रयोग, 'ड़' का प्रयोग तथा ओकारांतता राजस्थानी हिन्दी ने शौरसेनी प्राकृत से ग्रहण की है। राजस्थानी में मुख्य रचना 'पाथल व पीतल' है। यह वीर रस प्रधान कविता है। इसमें कवि महाराणा प्रताप को अकबर से लड़ने के लिए प्रेरित करता है। महाराणा प्रताप अपने पुत्र के हाथ से बिलाव द्वारा रोटी छिन लेने से क्षुब्ध होते हैं -

"हे घास री रोटी जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो"


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मीरा ने भी राजस्थानी में कृष्णभक्ति के गीत लिखे हैं। मीरा ने गीरधर गोपाल श्रीकृष्ण को अपना पति मानते हुए रचनाएँ लिखीं।

डिंगल शैली जिसमें 'पृथ्वीराज रासो' जैसी कालजयी रचना लिखी गई है भी राजस्थानी हिन्दी के करीब है। इसमें भी 'ड', 'ण' का प्रयोग अधिक है। उदाहरण -

"खट- खट तेगा बोले- --
अर_र_र_ गोळा घूटण लागे।"

इस प्रकार 'राजस्थानी हिन्दी' हिन्दी भाषा की एक अमूल्य निधि है। इसने शिल्प व संवेदना दोनों स्तरों पर योगदान दिया है। इससे भाषा का दर्जा दिये जाने की माँग भी उठती रहती है।

12/20 Good



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 15

लौकिक संस्कृत → पालि → प्राकृत
↓
प्रारंभिक हिन्दी ← अवहट्ट ← अपभ्रंश
1100 - 1400 ई. 900-1100 ई. (500-900 ई.)

प्रारंभिक हिन्दी ने अपने संस्कार अपभ्रंश व अवहट्ट से ग्रहण किये। हिन्दी अपभ्रंश व अवहट्ट की कैंचुल को छोड़कर अपना स्वरूप तैयार कर रही थी। बोलियों के विकास की रूपरेखा तैयार हो रही थी परंतु हिन्दी का स्वरूप क्या होगा यह विकसित नहीं हो पाया।

व्याकरणिक स्वरूप
- ध्वनिगत
- रूपगत
- शब्दगत

ध्वनिगत स्वरूप :- हिन्दी पुरानी हिन्दी में कुल 12 स्वर थे जो आज भी हैं।
- व्यंजनों में 'ङ', 'ष' को छोड़कर सारे व्यंजन आ चुके थे इनके स्थान पर 'स' का प्रयोग होता था। 'स' के स्थान पर 'ह' प्रयोग होता था।
- व्यंजनों में द्वित्वीकरण की प्रकृति थी।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ लिखें।
se do not write ing except the ion number in pace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- प्रारंभिक हिन्दी में अंतिम व प्रारंभिक स्वरों का लोप होने की प्रवृत्ति भी थी। उदाहरण - लज्जा - लाज
- क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण की प्रवृत्ति भी प्रारंभिक हिन्दी की एक विशेषता थी।

रूपगत स्वरूप:- संज्ञा, सर्वनाम व कारक चिन्हों का विकास हो रहा था। वचन व लिंग अवस्था वर्तमान के समान थी। द्वि वचन एक वचन व बहुवचन का ही प्रयोग होता था। संस्कृत की भाँति नपुंसकलिंग का प्रयोग भी नहीं था।

शब्दगत:- क्रमशः हिन्दी में तद्भव, देशज व विदेशज शब्दों का आगमन हुआ विदेशी आक्रमण से फारसी शब्दों की संख्या लगातार बढ़ी। देशज शब्द भी लोकभाषा से हिन्दी के अंदर समाहित हुये।

इस प्रकार प्रारंभिक हिन्दी अपने ~~शैशवकाल~~ शैशवकाल में थी। इसने आगे चलकर अवधी व ब्रज से संस्कार ग्रहण किये। आधुनिक काल में खड़ी बोली को अखिल भारतीय आधार प्रदान किया।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ लें।
se do not write ing except the ion number in pace)

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली के प्रयोग पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत साहित्य भक्तिकाल का प्रमुख स्तम्भ है। इसमें कबीर रैदास, मलूकदास, गुरुनानक व दादूदयाल जैसे भक्त रचनाकार आते हैं।

जब खड़ी बोली अपना स्वरूप तलाश रही थी तब संत-साहित्य के सहारे इसका विकास हुआ। इससे पहले सिद्ध-नाथ साहित्य में भी खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप देखने को मिलता है, अमीर खुसरो की पहेलियों, मुकरियों, निस्बत में भी खड़ी बोली के आरंभिक प्रमाण मिलते हैं।

संत साहित्य में सर्वप्रथम कबीर का नाम लिया जाता है। वह भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा के प्रवर्तक थे। इन्होंने साखी दोहा छंद में गायी जिनको बीजक में संकलित किया गया। साखी में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

कबीर ने धार्मिक पाखंडों का विरोध किया, शास्त्रवाद पर प्रहार किया तथा तार्किकता व यथार्थवाद पर बल दिया। वे कहते हैं-

"मैं कहता आँखन देखी तु कहता कागद लेखी"

प्रेम पर बल देते हुए कबीर ने कहा-

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।"

इसी प्रकार नानक देव ने भी खड़ी बोली मिश्रित पंजाबी का प्रयोग किया। मलूकदास ने कहा—

"अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम,
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम॥"



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार दादूदयाल ने साम्प्रदायिक सौहार्द का संदेश देते हुए कहा -

" दोनों भाई हाथ-पैर
दोनों भाई ~~[illegible]~~ कान
दोनों भाई नयन
हिन्दू -मुसलमान "

इस प्रकार संतों ने खड़ी बोली के माध्यम से अपनी बात लोगों तक पहुँचाई। इन्होंने साहित्य में सामाजिक समरसता का संदेश दिया, धार्मिक पाखण्डों का विरोध व भक्ति पर बल दिया।

9/15



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ब्रज' और 'अवधी' का विकास भक्तिकाल में हुआ भक्तिकाल को जार्ज ग्रियर्सन ने स्वर्णयुग कहा है। दोनों बोलियों में व्याकरणिक व साहित्यिक दोनों स्तरों पर घनिष्ठ संबंध है।

ब्रज भाषा ब्रजमण्डल की भाषा है। यह क्षेत्र 'अवधी' के कौसल क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। दोनों का उद्भव यद्यपि अलग-अलग भाषाओं से हुआ है परंतु बोधगम्यता है।

तुलसीदासजी ने ब्रज व अवधी में समान अधिकार से रचनाएँ लिखी। उन्होंने ब्रज में 'कवितावली' लिखी। राम काव्यधारा व कृष्ण काव्यधारा दोनों सगुण हैं। दोनों ने अखिल भारतीय स्तर पर भक्तिकाल को पहुँचाया। 'कवितावली' में तुलसीदास जी ने राम-भक्ति के अलावा सामाजिक समस्याओं व शैव भक्ति पर भी लिखा। सूरदास ने ब्रज भाषा में वात्सल्य को हर घर के आँगन तक पहुँचाया।

'अवधी' में लोक मिठास है जबकि ब्रज में शृंगार। ब्रज भाषा ने अखिल भारतीय स्तर प्राप्त किया काव्यभाषा के रूप में इस पर नंददास


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ने कहा –

"ब्रजभाषा ब्रजवास ही न अनुमानों
ऐसे ऐसे कवित की बोली है सो जानिए"

अवधी का गांभीर्य, ब्रज भाषा की चंचलता का पूरक है। दोनों भाषाओं का समन्वय अमीर खुसरो में देखने को मिलता है। अमीर खुसरो ने लिखा –

"गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस"

ब्रज व अवधी ने पूर्व मध्यकाल में भारत को भक्तिमय बनाया। इनमें कुछ भिन्नताएँ भी थी। अवधी में लोक-भाषा के शब्दों को समावेश करने की प्रवृत्ति थी। वहीं ब्रज भाषा में प्रवाह था जिससे मुक्तक रचनाएँ आसान थी। अवधी की भाषा में ठहराव था जिससे प्रबंध काव्य लिखा जाना संभव हुआ। यही कारण है कि तुलसी ने कवितावली लिखने में वर्षों लगाए परंतु जो ख्याति रामचरितमानस को मिली वह कवितावली को नहीं।

बाद में 'जान कवि' ने प्रेम व शृंगार परक रचना अवधी में लिखने की कोशिश की –

"पान भार है अधर को
नैनन अंजन भार
भूषण अति भारि लगे
नारी रही थकी हार"


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परंतु ब्रज भाषा ही रीतिकाल की भाषा बन पायी। दरबारी नफासत वर्णन अवधी जैसी मर्यादापूर्ण भाषा में संभव नहीं था। इसलिए ब्रज भाषा ने अवधी को पीछे छोड़ दिया।

ब्रज भाषा भी आधुनिक काल में नहीं टिक सकी। खड़ी बोली ने इसे अपदस्थ कर दिया। परंतु यह स्वाभाविक है। भाषा की विकास यात्रा में जब एक बोली मुखर होती है तो दूसरी गौण हो जाती है परंतु ब्रज व अवधी आज भी खड़ी बोली को अपने संस्कार देकर बोली के रूप में विद्यमान हैं।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी हिंदी का उद्भव मागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसकी प्रमुख बोलियाँ मैथिली, भोजपुरी, मगही है।

भोजपुरी पूर्वी उत्तरप्रदेश व बिहार में बोली जाती है। इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

- उकारांत भाषा - मातु, पितु
- ~~अ~~ ऐ, औ का अइ ~~अ~~ अउ में परिवर्तन
  उदाहरण - गउना, पइसा
- 'ड़' के स्थान पर 'र' का प्रयोग
  'पड़' - परा
- 'ण' का प्रयोग नहीं होता। 'न' का प्रयोग होता है।

वर्तमान काल – 'त' रूप का प्रयोग – करत, चलत
भविष्यत काल – 'ब' रूप का प्रयोग - खेलब, चलब
भूतकाल – 'ल' रूप का प्रयोग - करल

इसप्रकार भोजपुरी में अवधी से मिलती-जुलती व्याकरणिक विशेषताएँ है। यह सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

मगही बोली ~~छत्तीसगढ़~~ झारखण्ड व बिहार में बोली जाती है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैथिली बोली ~~प्रमुख~~ का साहित्य काफी उत्कृष्ट है। फणीश्वरनाथ रेणु भी आगे चलकर अपना प्रसिद्ध आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' इसी भाषा में लिखते हैं। विद्यापति के ~~का~~ गान भी मैथिली में ही हैं।

राजस्थानी लाएँ

6/15


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक विशेषताएँ:-

1) स्वरों की संख्या - दस

2) व्यंजनों का ~~क्~~ ~~क~~ ~~होना~~ अभाव - श, ष, ड़, ढ़, ऋ, न

यह व्यंजन अनुपस्थित थे।

3) ~~ह~~ क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण की प्रवृत्ति

4) व्यंजनों के ~~द्वित्व~~ द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति-

कर्पूर - कप्पूर

4) महाप्राण ध्वनियों की जगह 'ह' का प्रयोग

दधि - दहि।

5) ~~दि~~ द्विवचन का प्रयोग नहीं केवल एकवचन व बहुवचन

6) 'हिं' विभक्ति चिह्न ~~है~~ ही सारी ~~जगह~~ जगह

"देहहिं बुद्ध बसत - —"

7) नपुंसकलिंग का प्रयोग नहीं केवल स्त्रीलिंग व पुल्लिंग

8) देशज शब्दों का प्रयोग। विदेशज शब्द संख्या में कम थे।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अपभ्रंश के बाद अवहट्ट का विकास हुआ। उससे पुरानी हिन्दी। इस प्रकार अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ पुरानी हिन्दी में भी देखने को मिलती हैं।

6/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

मैथिल कोकिल विद्यापति हिन्दी साहित्य के स्तम्भ हैं। उन्हें गीतिकाव्य का प्रवर्तक माना जाता है। विद्यापति ने मुख्यतः मैथिली भाषा में लिखा। वह आदिकाल के कवि हैं।

विद्यापति की प्रमुख रचना पदावली है। इसमें विविध विषय हैं। इसमें शिव-गंगा की भक्ति, राधा-कृष्ण प्रसंग व सामाजिक चिंतन, लोक-परम्परा जैसे विविध विषय हैं। परंतु मूलतः यह श्रृंगार प्रधान रचना है।

श्रृंगार

राधा-कृष्ण सामान्य प्रेमी व प्रेमिका के रूप में हैं। राधा के मनोभाव, शारीरिक अंगों का चित्रण श्रृंगारिक है। राधा का प्रेम लौकिक है। वह घर-गुरुजन की परवाह किये बिना अपने प्रियतम से मिलती हैं—

"घर गुरुजन डर न मानब
वचन चूकब नांही"

राधी की आधी खुली आँखों पर कृष्ण मोहित हैं। इस पर विद्यापति कहते हैं-

'वह कैसल तुम राधे, किनल कन्हाई लोचनआधे'



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार विद्यापति की राधा शृंगारिक है। ~~तुलसी की~~ सूर की राधा वियोग में कृषकाय हो जाती हैं परंतु विद्यापति की राधा वियोग में भी आनंद की अनुभूति करती है। सूर कहते हैं - 'अति मलीन वृषभानु दुलारी'

इस तरह विद्यापति की रचनाओं में सौंदर्य चेतना है।

5/10

मॉडल उत्तर भी देख लें।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य में उच्च स्थान रखते हैं। इन्होंने नई कविता को 'असाध्य वीणा' जैसी रचना से प्रसिद्ध किया। इनकी कहानियाँ प्रेमचन्द्र उत्तर युग में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

प्रेमचंद की कहानियाँ पहले ~~आदर्शवाद~~ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की तरफ थी, फिर पूर्णतः यथार्थवादी। परंतु इनकी सीमा थी कि वे सामाजिक ~~परिस्थितियां~~ परिस्थितियों व मनोविज्ञान तक सीमित थी। जैनेन्द्र ने इसे अर्न्तमन तक पहुँचाया तथा अज्ञेय ने इसे ऊँचाई दी। अतः अज्ञेय की कहानियाँ ~~मनोमन~~ मनोवैज्ञानिक ~~विश्व~~ विश्लेषणात्मक थी।

अज्ञेय ने नगरीय जीवन की विसंगतियों पर टिप्पणी की। उनका कथानक आधुनिक समाज की समस्याओं पर केन्द्रित था।

अज्ञेय की भाषा शुद्ध व तत्सम प्रधान थी कहीं-कहीं अंग्रेजी भाषा के शब्द प्रसंगानुसार प्रयुक्त हुये हैं।

अज्ञेय की कहानियों के पात्र अर्न्तद्वन्द्व में उलझे हुए प्रतीत होते हैं। घटनाएँ संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार, शहरीकरण व आधुनिकता से प्रेरित हैं।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) इप्टा

इप्टा अर्थात् 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसियेसन'
इप्टा ने भारतीय रंगमंच को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इप्टा का उदय प्रगतिवादी रचनाकारों के सहयोग से हुआ। हिन्दी नाटक को 50 के दशक में इप्टा ने सुगठित करने का प्रयास किया। इप्टा ने विभिन्न नाटकों का मंचन सम्पूर्ण देश में किया।

इप्टा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान "नुक्कड़" नाटक को लोकप्रिय करने में है। जब नाटक आमजन से दूर हो रहा था, आम व्यक्ति के लिए रंगमंच सुलभ नहीं था तब नुक्कड़ नाटकों ने सर्वसाधारण तक पहुँच स्थापित की।

रंगमंच में व्यावसायीकरण के कारण जो आर्थिक विषमताओं से गुजरने वाले कलाकार थे उनको इप्टा का संरक्षण मिला। असगर वजाहत इत्यादि नाटककारों ने इप्टा के माध्यम से हिन्दी नाटक को जीवित रखा व नयी ऊर्जा व दिशा दी।

और ?

5/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

अकहानी का विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ। जब अस्तित्व व एब्सर्ड (असंगत) नाटक का उद्भव हुआ उसी समय कथा-साहित्य में अकहानी का विकास हुआ।

अकहानी के पीछे उद्देश्य व प्रेरणा बदलता हुआ सामाजिक परिवेश, संयुक्त परिवार का विघटन, शहरीकरण से उपजी एकांतता व अधूरापन तथा यौन कुंठाओं का साहित्यीकरण था।

आजादी के बाद जब स्वप्न पूरे नहीं हुए तब कवि नागार्जुन ने कहा-

"आ धँसी-धँसी ये आँखें, पिचके पिचके गाल।
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल।"

यही निराशा अकहानी में भी व्यक्त हुई। यहाँ कथानक बिखरा हुआ था। जब जीवन में बिखराव हो तो फिर कथानक में क्यों नहीं।

यह घटना प्रधान नहीं थी। इनमें बस स्थितियाँ होती हैं। इन कहानियों में रिक्तता, बोझिलता का बोध होता है।

संवाद व भाषा की दृष्टि से भी 'अकहानी' साहित्यिक रूप से उत्कृष्ट नहीं कही जा सकती। भाषा बेलौस व सीधी-सपाट थी।

अकहानी के पात्र प्रायः समाज में हेय दृष्टि से देखे जाने वाले अथवा परिस्थितियों से हारे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुए प्रतीत होते थे।

संवेदना की दृष्टि से अकहानी में ~~अन्तर्द्वन्द्व~~ अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण उजागर होता है।

इस प्रकार 'अकहानी' कहानी के इतिहास की परंपराओं को तोड़कर एक नया प्रयोग था।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) नाटककार रामकुमार वर्मा

डॉ. रामकुमार वर्मा एक सफल नाटककार, आलोचक व संपादक थे। उनकी बहुमुखी प्रतिभा ने हिन्दी साहित्य को ~~उज्ज्वलित किया।~~ नई पहचान दी। उन्हें एकांकीकार के रूप में सर्वाधिक ख्याति मिली।

रामकुमार वर्मा की एकांकी इतिहास का सहारा लेती हुई समसामयिक समस्याओं को उठाती है। उनकी प्रमुख एकांकी 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई' है। उन्होंने एकांकी की तारीफ करते हुए कहा कि यहाँ कली की भाँति फूल खिलने की प्रवृत्ति होती है, नाटक में लता की तरह फैलने की विशृंखलता।

रामकुमार वर्मा के पात्र आदर्शोन्मुख होते थे। उनके पात्र अगर प्रेम के मरने या जीने में से चुनाव करना पड़े तो मृत्यु को चुनते थे। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अपने नाटकों में प्रदर्शित किया। उनका प्रमुख नाटक 'चित्ररेखा' है।

उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों के अलावा सामाजिक ~~व~~ समस्याओं पर भी नाटक लिखा। उन्होंने पीएचडी की ~~डिग्री~~ डिग्री हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्राप्त की। धर्मवीर भारती उन्हें अपना गुरु समझते थे। डॉ. रामकुमार वर्मा ने काव्य नाटक भी लिखे। इस प्रकार वह सर्वमुखी प्रतिभा के धनी थे।

6/10 Gd


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) कोणार्क नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 20

कोणार्क नाटक जगदीश प्रसाद माथुर का नाटक है।
इसमें बहुस्तरीय द्वन्द्व है–

1) सृजन व विध्वंस के बीच
2) नयी व पुरानी पीढ़ी के बीच

इसमें कोणार्क के सूर्य मंदिर की विषयवस्तु के आधार पर आधुनिक समस्याओं को उभारा गया है। नाट्य शिल्प के आधार कथानक, चरित्र, संवाद, घटना, दृश्य व रंगमंचीयता हैं।

कथानक ऐतिहासिक है। जगदीश प्रसाद माथुर के नाटक अतीत से ऊर्जा लेकर वर्तमान की समस्याएँ उठाते हैं। इन्होंने 'इतिहास का मिथकीकरण' किया है। इतिहास का मिथकीकरण करने का उद्देश्य प्राचीन प्रतीकों के माध्यम से जिज्ञासा पैदा करना है।

और विस्तार दें

इनकी भाषा प्रतीकात्मक है। संवाद प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखे गये हैं। इससे संवाद रंगमंचीयता के अनुकूल बनते हैं।

जगदीश प्रसाद माथुर के नाटक रंगमंच की दृष्टि से बेहद सफल रहे हैं। उन्होंने आकाशवाणी के माध्यम से हिन्दी रंगमंच को नई पहचान दिलायी।

9/20


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु के योगदान पर प्रकाश डालिए। 30

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जॉर्ज ग्रियर्सन - "द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दन हिन्दुस्तान"। यह प्रथम गंभीर प्रयास माना जाता है।

मिश्रबंधु - 'मिश्रबंधु विनोद'। इसमें 5000 से ज्यादा कवियों का वर्णन है। यहाँ तुलनात्मक संदर्भों में इतिहास लेखन प्रारंभ किया गया। यह वृहद ग्रंथ है। रामचंद्र शुक्ल ने भी कवि परिचय इसी ग्रंथ से लिया है।

जार्ज ग्रियर्सन ने सर्वप्रथम कालक्रमानुसार विभाजन किया। इन्होंने आदिकाल को 'चारणकाल' नाम दिया। इन्होंने रचनाओं का मूल्यांकन भी किया। कवि परिचय भी विस्तृत था। इन्होंने भक्तियुग को स्वर्णयुग माना तथा इसके उद्भव का कारण ईसाई धर्म के प्रचार को माना। हालांकि बाद में इनके कुछ तथ्य अमान्य हो गये परंतु यह प्रथम गंभीर प्रयास माना जाता है।

परंतु मिश्रबंधु व ग्रियर्सन दोनों में इतिहास बोध का अभाव था। शुक्ल जी ने



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपनी रचना "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में सर्वप्रथम इतिहास बोध के आधार पर काल विभाजन किया। शुक्ल जी ने प्रत्यक्षवादी तरीके से साहित्येतिहास लेखन किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation